॥ श्री वीतरागाय नमः॥

रत्नत्रय विधान

कविवर पण्डित टेकचन्द विरचित

(रत्नत्रय उद्यापन)

प्रस्तावना बेसरीछन्द

सरधो जानो पालो भाई, तीनों में कर राग जुदाई।
लैं लै नीका द्रव्य सुसारा, पूजे पाओ मोक्षागारा॥

नाराच छन्द

भला सुज्ञान दर्शना - चरित्तरा सुसार है।
भवसमुद्रनाव मोक्ष-पन्थ का अधार है॥
यही जु पन्थ सिद्धि का, नहीं जु और जानिये।
जजों सुदर्श ज्ञान वा, चरित्र भक्ति आनिये॥
सार येहि तीन रत्न, पारखी मुनीन्द्र है।
लहें जु राग छांड़ि या, बिना गुणी न सोह हैं॥
नहीं जु राग द्वेष ताहि, पाइये कदा सही।
तीन रत्नरूप वस्तु, चित्त में जिन्हों लही॥

मुनीन्द्र याहि पायके, न पांय फिर भवा सही।
जिनेन्द्र याहि पायके, प्रिया शिवा तिया गही॥
यही जु तीन मानका, जु मोक्षपन्थ जानका।
यही जु ज्ञान केवला, निकट्ट वेग आनका॥
यही जु तीन रत्न इन्द्र, चन्द्र को नहीं मिलै॥
खगा फणीन्द्र चक्रि को, न भूप को धरा तलें॥
मुनी बिना सराग के, न पाइये कभी सही।
जु तीन होय एकठे, जिनेन्द्र के गुणा यही॥
नमों जु ज्ञान दर्शना, चरित्र जो शिवा यथा।
रहे सदा हिये सुभक्ति, मो तनें इन्हीं कथा॥
भवान्तरे मिलैं सु मोहि, तीन रत्न आयकें।
चाह और मोय ना, सुनों जु अर्ज ध्याय कें।

गीतिका छन्द

ये तीन रत्न अपार मौलिक, पारखी विरलो सही।
जिय मोह अन्ध न भेद पावे, खेद जो बहुतो लही॥
होवे निकट भव अब्धि जाके, सो लहे सहजहिं भया।
मुनि होय राज्य विहाय पावे, शाश्वतो पद इन दया॥
इनही प्रभावै मोक्ष पावे, कर्म नाशै भवकरा।
सुख होय सब दुख खोय, सहजहिं स्वर्ग पावे मनहरा॥
ये ज्ञान सम्यक दर्श चारित, तीन ही सुखदाय है।
इन धार जग में पूज्य पदवी, लहे जिन धुनि गाय है॥

अडिल्ल छन्द

रत्नत्रय भव हरे, स्वर्ग शिवदाय जी।
रत्नत्रयसम आभूषण, न दिखाय जी॥
याकी महिमा देख, इन्द से पग परें।
ये त्रय ज्ञान बढाय, सिद्धस्थल ले थरें॥

चौपाई छन्द

रत्नत्रय बिन भव भरमाय, रत्नत्रय तजि पाप कमाय।
अब हम उर वाञ्छा यों थही, मिले हितू रत्नत्रय सही॥
सोरठा- यह रत्नत्रय सार, शरण मिल्यो हमको सही।
भवदधि तारन हार, तातैं मैं पल पल नमों॥
दोहा- रत्नत्रय जग में कहा, मुक्ति महा फलदाय।
योग शुद्ध करके नमों, भवतति लेहुं नसाय॥

॥ अथ समुच्चय पूजा॥

स्थापना ॥ गीतिका छन्द ॥

सत्य दर्शन ज्ञान चारित, मोक्ष मारग जिन कहे।
मोक्षाभिलाषी धरें इनको, इन बिना शिव ना लहे॥
यों जानि तीनों रत्न पूजों, ध्याय के इसही धरा।
उर भक्ति धर मन वचन काया, ता फलें सब अघ हरा॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूपरत्नत्रयधर्म! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

॥ चाल मुनियानन्दी ॥

नीर निरमल पदम, कुण्ड को सार जी॥
उज्ज्वलो क्षीरसम, सरस या धार जी॥
रत्नझारी विषैं, लेय गुण गाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

बावनो चन्दना, अगर शुभ लाइये।
नीर निरमल थकी, घसि सुरभि लाइये॥
कनक पियाले विषैं, धरि सुगुन गाय के। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत अक्षत सुभग, शुद्ध नख सिख सही।
गन्धधर यों यथा, फूल कुन्दा कही॥
धार पातर विषैं, आप कर लायके। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल कल्पवृक्ष के, रङ्ग नाना धरें।
गन्ध आपनी घनी, भ्रमर मन वश करें॥
पुष्प ऐसे तनी, माल कर लाय के। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभग नैवेद्य जो, भले रस धार जी।
सद्य मोदक घने, स्वाद करतार जी॥
यों चरू कंचन के, पात्र धर लाय के। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मणिमय महा, ज्योतिकर्त्ता सही।
तेज ताके कने, ध्वांत भागे सही॥
धार शुभपात्र में, दीप कर लाय के।
जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशधा महा, गन्ध पूरित कही।
बहु चन्दनादि शुभ, द्रव्य संयुत सही॥
लेय कर धूप यों, अगनि में लाय के। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौंग खारक भले, श्रीफला सार जी।
सुभग बादाम पुंगी, फलाधार जी॥
इन आदि लेय फल, आप कर लाय के॥ जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर चन्दन अखत, फूल चरु जानिये।
दीप अरु धूप फल, अर्घ्य कर आनिये॥
धारि उर भक्ति गुन, गान सुख पाय के। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दरश ज्ञान वृत्त ये, रत्न शुभ हैं सही।
यही तीन रत्न शिव, लोक की दे मही॥
जान यों अर्घ्य ले, आय उमगाय के। जजों०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

तीन रत्न मुनिराज धन, अविनाशी विन छेह।
इन्द्र स्तुतिवांछा करे, कवि मांगत है येह॥ १॥

त्रिभङ्गी छन्द

सम्यक दृग जाके, हो शिव ताके, दोष न वांके, होय कदा।
सम्यक् शुध ज्ञानो, हो भ्रम हानो, तत्त्व पिछानो, मोक्ष पदा॥
चारित सुध धारे सम्यक् लारे, भवदधि तारे नाव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना, गुरु वच इतना पूज तिसो॥ २॥
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
शुध ज्ञान उपावा सो शुध भावा, शिवमारग धावा कर्म हरे॥
शुभचारितनीकासुखदाजियका,शिवतियपियकामीतजिसो।यह०।३॥
तिस सम्यक् पाया, दोष उड़ाया, जिनगुण गाया, ज्ञान धरं।
ले सम्यक् ज्ञानी, अम्मृत पानी, भवतप हानी, पुष्ट करं॥
चारित भवसागर, नाव उजागर, पार उतारन, जान तिसो।यह०।४॥
सुध सम्यक् सारं, भविजिय धारं, है भव तारं, सिद्ध थलं।
यह सम्यक्ज्ञानं, भ्रमतम हानं, सब विध जानो, युक्त कलं॥
चारित शुध सोई, शिवमग जोई, तारक जो हो, नाव जिसो॥यह०।५॥
सम्यक् परभावा, नहिं भवदावा, मरण मिटावा, सुखकारी।
जो सम्यग्ज्ञानी, दया-निधानी, सब विध ज्ञानी, गुणधारी॥
सम्यक् चारित्ता, जग जिय मित्ता, सज्जन चित्ता, मित्र तिसो॥यह०।६॥
सम्यक् धन जाके, सुर नत वाके, कमी न वाके धन-धारी।
जे सम्यग्ज्ञानी मिथ्याभानी, ज्ञान पिछानी, सुखकारी॥

चारितधर जोगी, शिवतिय भोगी, मोक्षनियोगी, जीव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना, गुरु वच इतना पूज इसो।यह०।७॥
सम्यक् सुध सोही, लखे न मोही, सत्य जु सो ही कर्म हरे।
जिन भाषित ठाने, निज पर जाने, सम्यग्ज्ञानं सोहि धरे॥
जो चारित धारे, कर्म निवारे, आत्म सुधारे, ध्यान जिसो।यह०।८॥
सम्यक् सरधाना, कुगुरु छुड़ाना, बुध परधाना, मोक्ष चहा।
सो सम्यग्ज्ञानी, जिनध्वनि जानी, सब विध मानी, और कहा॥
जे चारित धारी, निज अघहारी, पुण्य भण्डारी, जान जिसो॥यह०।९॥

दोहा- सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित देहु मिलाय।
तीनों शिवमग जिन कहे, जो होते शिवदाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

अडिल्ल छन्द

सम्यग्दर्शन सोय, जहां वसुमद नहीं।
शङ्कादिक वसु दोष, रहें जामें नहीं॥
नहीं मूढ़ता तीन, अनायतन षट नहीं।
या विध समकित थाप, जजों शुभफल मही॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथअष्टकम्

गीता छन्द

वर नीर सागर क्षीर जै सो, उज्ज्वलो सुखदाय जी।
शुभगन्ध निर्मल स्वाद याको, सद्य शुद्ध सुल्याय जी॥
धरि रतनझारी हाथ ले निज, भक्ति उर में बहु धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावनो चन्दन सुगन्ध सु, नीर संग घसि लाय हों।
शुभ अगर आदि मनोज्ञ गन्ध, सु तास में मिलवाय हों॥
ले कनक पातर भावशुभ तैं, भक्ति-धन लक्षहिं धरी।
मैं जजों सम्यक्दरश मल विन, भावसों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित बीन नख शिख, शुद्ध उज्ज्वल लाय जी।
शुभ गन्धमय अति धोय नीके, आप कर सुखदाय जी॥
कर भले पातर मांहि तिनको, भक्ति शुभ फलदा करी। मैं०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल शुभतर वरन नाना, जाति हू बहुविध सही।
अति गन्ध युत सुरवृक्ष के शुभ, जाय उपमा ना कही॥
कर माल तिनकी हाथ ले निज, भावना सुध उर धरो।
मैं जजों सम्यकदरशमलबिन, भावसों थुति उच्चरो॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य मोदक आदि नीके, और भी बहुविध कही।
तिन मांहि नाना मेल रसको, स्वाद को मानों मही॥
चरु करी या विध धारि पातर, भक्ति मन वच तन धरो। मैं०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर दीप मणिमय ज्योति धारी, नाश कर तम को सही।
धर मध्य पातर हेम के शुभ, आरती करनी चही॥
उर भक्ति मनवचकाय धरि करि, विनय तें मुख श्रुति करो। मैं०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशधा द्रव्य ले के, करी है सुखकार जी।
तिस मांहि गन्ध अपार प्रसरत, भ्रमर शब्द उचार जी॥
इस जाति कौ शुभ धूप देकर, अग्नि में थुति कर धरी। मैं०।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सुपारी लोंग खारक, चोच मोच बदाम जी।
इन आदि और अनेक फल ले, महाशुभ के धाम जी॥
ले भक्ति कर धर सुभग बासन, आपने कर ले धरी।
मैं जजों सम्यकदरश मल बिन, भावसों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप सु फल सही।
सब मेल अर्घ्य बनाय नीको, भले पातर में लही॥
उर भक्ति मन वच काय करके, एक ध्यान सु ले करी।
मैं जजों सम्यकदरश मलबिन, भाव सों श्रुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

त्रिभङ्गी छन्द

मम नाना, मामा, अतिबल ठामा, धन के धामा, सुखदाई।
तिन राज सुजानैं, सब जग मानें, वचन प्रमानें, सब भाई॥
यह 'जाति' सुमद्दा, जानि निषिद्दा, अघ को हद्दा, जान हिये।
याको जु निवारे, सम्यक्सारे, शिव पद धारे, जजि थुति वे॥१॥

ॐ ह्रीं जातिमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है बाप हमारा, सुत धन वारा, सब को प्यारा ज्ञानमई।
सुत दारा मेरा, नृप ढिंग केरा, काम करेरा, जान सई॥
यह 'कुलमद' जानो, अघ को थानो, तज वचनानो, बात हिये।
सम्यक् या बिन सो, मोक्ष करन सो, जजि भवि मन सों, भक्ति दिये॥२॥

ॐ ह्रीं कुलमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं बहुत कमाऊं, द्रव्य उपाऊं, सब दिशि जाऊं खेप लई।
मो में बुध नीकी, वनज करे की, युक्ति धरे की, बात सई॥
जहं ही मैं जाऊं, आदर पाऊं, नव-निधि लाऊं, जान हिये।
यह धन का मद्दा, जान निषिद्दा, सम्यक् शुद्धा, जजि थुति ये॥३॥

ॐ ह्रीं धनमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रूप हमारो, और न धारी, मोसे हारो मदन जिसो।
सुर हूं लखि लज्जे, यों छवि छज्जे, बहु कहा कहिज्जे जान इसो॥
यह 'रूप मदा है' ज्ञान जुदा है, सम्यक् दाहै, आप मई।
तज याको भाई जजि थुति लाई, सम्यक् पाई मोक्ष सई॥४॥

ॐ ह्रीं रूपमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तपसी भारी शक्ति अपारी, वास धरारी वरष मई।
चंचल मन जीत्या भवभव भीत्या, नहिं तन मीत्या जान भई॥
यह 'तपमद' जानो अध को थानो, दोष बढ़ानो कर हानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी॥५॥

ॐ ह्रीं तपोमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम बहु बलवाना मल्ल समाना, गजमद हाना जोध यही।
मेरे बल आगे अरि भय लागे, को मो आगे वीर कही॥
यह 'बल' को मद है अघ को हद है, सब हित रद है करि हानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी॥६॥

ॐ ह्रीं बलमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं बहुश्रुत जोई भरम न कोई, चर्चा जोई, बात करो।
मैं षट् मत जोये पंडित टोये, सब मत धोये ज्ञान धरो॥
'विद्यामद' ये ही तजि भवि जेही, सरधा ये ही जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी॥७॥

ॐ ह्रीं विद्यामदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोकों नृप जाने, मुखिया माने, जग सन्माने हुकम घनों।
चाहों मैं मारों तथा उधारों, वचन उचारों सोइ ठनों॥
यह मद 'अधिकारी' तज भवधारी, भाव सम्हारी धुनि ठानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी॥८॥

ॐ ह्रीं अधिकारमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ शङ्का आवे, धरम नशावे, पाप बढावे दुखदाई।
शङ्का जब होई सम्यक् खोई, सरधा वोई मनलाई॥

यह 'शङ्का मल' है फल अति खल है, त्याग सु-कल है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं शंकामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वृष-रस चाखे फल अभिलाखे, जगसुख भाखे मोहि मिले।
मैं जिनवृष सेऊं खगथल लेऊं, सुरसुख वेऊं चाह फले॥
यह वाञ्छा जानो 'कांक्षा' आनो, तज वच आनो जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं कांक्षामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर वस्तु सु जोवे घिन चित बोवे, अरति बढ़ोवे मन माहीं।
यह वस्तु बुरी है क्यों जु धरी है, कौन करी है दुखदाई॥
यह दोष 'विचिकित्सा' अघ को अंशा, त्यागो मनसा श्रुतज्ञानी।
सम्यक् सुध साई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं विचिकित्सामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भेद न पावे शीश नवावे, भक्ति बढावे वेद कही।
सब को गुरु माने ज्ञान न आने, धर्म न जाने शुद्ध सही॥
यह 'मूढ़' स्वभावा पाप बढ़ावा, तज सुख दावा मन आनी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं मूढ़तामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

पर अवगुण जोई ढकै न सोई, मुख कह कोई पाप धरा।
पर के छल देखे कहत विशेखे, सो अघ भेखे जान खरा॥
कह दोष पराया यह अघ भाया, त्याग सुभाया बुध आनी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ १३ ॥
ॐ ह्रीं अनुपगूहनमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख धर्म पराया दोष बढ़ाया, पाप उपाया मन ल्याई।
या धर्म बढाऊं सो विधि लाऊं, ज्ञान बढ़ाऊं चित ल्याई॥
यह अवगुण जानो, 'अतिथि' सुमानो, तजि हित आनो शुभ जानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं अस्थितिकरणमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मी जन जोवे हरष न होवे, समचित सोवे अघ-हारी।
वृषथान निहारे नेह न धारे, सकति सम्हारे अधिकारी॥
यह 'वत्सल' नाहीं पाप बढ़ाई, तज मन लाई बुध आनी।
सम्यक् सुधि सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं अवात्सल्यमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्सव नहिं जाने हरष न आने, नाहिं सुहाने मन माहीं।
नहिं ताहि सरावे जस नहिं गावे, पाप कमावे चित ठाहीं॥
यह दोष बड़ा है त्याग जुड़ा है, धर्म बड़ा है मन आनी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं अप्रभावनामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

ना सर्वज्ञ न तारन हार, ताको पूजत देय निहार।
सो यह देवमूढ़ता जोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय ॥ १७ ॥
ॐ ह्रीं देवमूढ़तारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दया बिन सो है सही, धारण करे प्रतीक्षा नहीं।
सो यह धर्ममूढ़ता सोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय ॥ १८ ॥
ॐ ह्रीं धर्ममूढ़तारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग नहिं नगन शरीर, सेवे कुगुरु राग धर धीर।
सो यह गुरूमूढ़ता जोंय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥ १९॥
ॐ ह्रीं गुरूमूढ़तारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मनाश बिन देव कहाय, तिनको परशंसै थुति लाय।
यह अनायतन दोष सुजोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥२०॥
ॐ ह्रीं कुदेवप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ताहि कुदेव सेवक हूं जान, परशंसै मन में हित आन।
यह अनायतन दोष जुहोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥२१॥
ॐ ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयारहित ही धर्म सु मान, फिर ताकी परशंसा ठान।
यह अनायतन दोष जुहोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥२२॥
ॐ ह्रीं कुधर्मप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसाधर्म सेवकी जान, ताको परशंसै शुभ मान।
यह अनायतन दोष जुहोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥२३॥
ॐ ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष धर प्रज्ञावान, ये गुरु परशंसै बिन ज्ञान।
यह अनायतन दोष जुहोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥२४॥
ॐ ह्रीं कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरुन की सेवा जो करे, ताकी परशंसा चित धरे।
यह अनायतन दोष जुहोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय॥२५॥
ॐ ह्रीं कुगुरुसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह द्यूत व्यसन है पाप-मूल, यह खेल लहे जिय दुःखशूल।
दे अपयशवधबन्धन सु जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥२६॥
ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आमिष खाये मन अशुचिवान, हिंसा या सम होवे न आन।
तिस देखत ही मन मलिन होय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥२७॥
ॐ ह्रीं आमिषव्यसनरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीके मदिरा मूर्छा लहाय, सब सुध बुध अपनी दे गमाय।
यह मदिराव्यसन सुधर्म खोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥२८॥
ॐ ह्रीं मदिराव्यसनरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणिका गिन पातल जूँठ जेम, अति लोकनिन्द्य परसिद्ध येम।
यह व्यसन नरकपद दाय जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥२९॥
ॐ ह्रीं गणिकाव्यसनरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये जीव धास खा वन वसाय, तिनको मारें पारधि कुभाय।
यह व्यसन नरक मारग सजोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥३०॥
ॐ ह्रीं आखेटव्यसनरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परद्रव्य हरे दुठ चोर जान, लहिं बध बन्धन जगनिन्द्य थान।
यह चौर्यव्यसन दुखदाय जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥३१॥
ॐ ह्रीं चौर्यव्यसनरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परनारि व्यसन दुठ जीव धार, सो लहें नरकदुख पापभार।
यह व्यसन महादुखदाय जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥३२॥
ॐ ह्रीं परनारिव्यसनरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ चौपाई छन्द ॥

किये दान संक्रान्ति सुजान, होय सुखी नाहीं दुख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥३३॥
ॐ ह्रीं कुपर्वदानदोषरहितसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह पूजें सुख साता मान, नहिं पूजें दुखकूप बखान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥३४॥
ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्यादिग्रहपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजें भूमी भूपति थाय, इसविधि मिथ्याभाव उपाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥३५॥
ॐ ह्रीं भूमिपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसागम जो सेव कराय, मिथ्या मन्त्र जन्त्र पुजवाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इसविधि जजि सुध समकित सोय ॥३६॥
ॐ ह्रीं कुधर्मसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत पूजें दीरघ जान, जाके जजें होय नित मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इसविधि जजि सुध समकित सोय ॥३७॥
ॐ ह्रीं पर्वतादिपूजामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधि नदी सुपरे अघ जाय, होय पुण्य जिय को सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥३८॥
ॐ ह्रीं उदधिस्नानमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि माहिं जीवित जर जाय, देवपना वे जीव लहाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥३९॥
ॐ ह्रीं अग्निपातमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरु सेवतें साता पाय, यह दे ऋद्धि परम सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥४०॥
ॐ ह्रीं कुगुरुसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि देव कर मानें सही, पूजें दीपक हो शुभ कही।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इसविधि जजि सुध समकित सोय ॥४१॥
ॐ ह्रीं अग्निसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गायमूत्र अतिपूत बताय, या लागे तन निर्मल धाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इसविधि जजि सुध समकित सोय ॥४२॥
ॐ ह्रीं गोमूत्रसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

गज घोटक वृष सेव कराय, इन सेये इन लाभ लहाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥४३॥
ॐ ह्रीं वाहनसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असि बरछी भाला बन्दूक, पूजें शक्ति लहे ना चूक।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥४४॥
ॐ ह्रीं शस्त्रपूजामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालक पूजें देव सु मान, सो सब मिथ्यातम मतिमान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥४५॥
ॐ ह्रीं बालकपूजामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि तें पड़तो काय छुड़ाय, तो वांछितसुख को जन पाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय ॥४६॥
ॐ ह्रीं गिरिपतनमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसकदेव दया बिन जान, देखत क्रूर जजें सुख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विधि जजि सुध समकित सोय॥ ४७॥

ॐ ह्रीं हिंसकदेवसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निशा अहार करे नहिं जोय, जाके उर करुणा बहु होय।
मांसाहारी निशि को खाय, या बिन जजि सुध समकित भाय॥ ४८॥

ॐ ह्रीं निशाहारमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनगाल्यो जल पीवे नांहि, दयासहित उर धर्म सुभाय।
ऐसो गुण जाके बहु होय, सो समकित पूजें सुख होय॥ ४९॥

ॐ ह्रीं अगालितजलपानमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्यादिक गुणजुत जो होय, कहे दोष तें एक न जोय।
निश्चय अरु व्यवहार सुधाय, सो समकित पूजों थुति लाय॥ ५०॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला॥

दोहा- समकित सांचा धर्म है, मोक्षवृक्ष को मूल।
श्रद्धा करना गाढ उर, हरे विषय अघशूल॥ १॥

समकित सार धर्म का बीजा, यातें पापमैल सब छीजा।
याही तें जगपूज्य कहावे, योही जामनमरण मिटावे॥ २॥
समकित सा नाहीं धन कोई, समकित कल्पवृक्ष सम होई।
समकित के गुण मुनिगण गावें, समकित जामनमरण मिटावे॥ ३॥
समकित ही सब कारज सारे, समकित मिथ्यारोग निवारे।
समकित शुद्ध धर्म कहलावे, समकित जामनमरण मिटावे॥ ४॥

समकित रतन जास मन माहीं, ता सम आभूषण जग नाहीं।
समकित सुर-शिव थान दिखावे, समकित जामनमरण मिटावे॥ ५॥
समकित बिन मुनि को शिव नाहीं, समकितसहित जीव शिव पाहीं।
समकित देव धर्म बतलावे, समकित जामनमरण मिटावे॥ ६॥
समकित अग्नि कर्म निज जारे, समकित मोह-मल्ल को मारे।
समकित ही भ्रम दूर हटावे, समकित जामनमरण मिटावे॥ ७॥
समकित तें हरि को पद होई, समकित फल अहमिन्द्र सु होई।
समकित सहित मुक्तिपद पावे, समकित जामनमरण मिटावे॥ ८॥

दोहा- समकित मेरे शीश पर, करो वास यह आस।
समकित गुण ही मुख रहे, जब तक तन में स्वास॥ ९॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजा प्रारम्भ

मति श्रुत अवधिज्ञान मन लाय, मनपर्यय केवल समुझाय।
ये ही पांचों सम्यग्ज्ञान, पूजों थाप यहां हित आन॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

भुजङ्गप्रयात छन्द

लिया नीर चोखा, पदम कुण्ड केरा।
महा निर्मला गन्ध, जुत भर्म हेरा॥
भर्‌यो, स्वर्ण झारी, घनी भक्ति लाई।
जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। १।

भला गन्ध धारी, लिया चन्दना है।
घिसा नीर से फेर, कर वन्दना है॥
धार भक्ति उर में, भले पात्र लाई॥ जजों.॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा। २।

भले तन्दुला ऊजरे खण्ड नाहीं।
धरें गंध नीकों भली शोभा माहीं॥
लिये हाथ अपने घनी भक्ति लाई॥ जजों.॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय अक्षतां निर्वपामीति स्वाहा। ३।

भले गन्धयुत फूल ले माल कीनी।
घने वर्ण के कोमला भक्ति चीनी॥
धरे हाथ माहीं भली भक्ति गाई।
जजों ज्ञान सम्यक घना सौख्यदाई॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा। ४।

नैवेद्य नीका हितू जान जिय का।
भले मोदकादी रस डारि नीका॥
धरे पात्र में हाथ ले भक्ति गाई॥ जजों.॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा। ५।

करे दीप तमनाश शुभ रत्न केरा।
धरे थाल माहीं खुशी चित मेरा॥
करी आरती हर्ष सह भक्ति भाई॥ जजों.॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा। ६।

धरी धूप दशधा भली गन्ध धारी।
लिये चन्दनागुरु सुगन्धी है भारी॥
करों वीनती अग्नि में खेय भाई॥ जजों.॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा। ७।

लिये श्रीफला लोंग खारक बदामा।
इन्हें आदि फल और बहु जान कामा॥
धरे पात्र माहीं घनी भक्ति लाई॥ जजों.॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा। ८।

लिया नीर चन्दन अखत पुष्प जानो।
नैवेद्य फल दीप अरु धूप मानो॥
करो अर्घ्य सुन्दर घनी भक्ति गाई॥ जजों.॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ९।

प्रत्येकार्घ्य बेसरीछन्द

सपरस इन्द्रिय तें सब जाने, विषय आठ ताकी विधि माने।
सम्यक-सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥ १॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना तें जो विषय पिछाने, पांच भेद सब अंश सु आने।
सम्यक-सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥ २॥

ॐ ह्रीं रसेनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय जाने जो भाई, दोय भेद ताकी विधि गाई।
सम्यक-सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥ ३॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु विषय पंचविध जाने, लाल पीत श्यामादिक माने।
सम्यक-सहित ज्ञान तें होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥ ४॥
ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोत्रन्द्रिय तो शब्द पिछाने, तीन भेद ताके पहिचाने।
सम्यक-सहित ज्ञान तें होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥ ५॥
ॐ ह्रीं श्रीत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जो मन विकलप तें जोवे, भई होयगी सब जो होवे।
सम्यक-सहित ज्ञान तें होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥ ६॥
ॐ ह्रीं मनोद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

ग्यारह अंग पूर्वादि सु जान, अंग बारहो सुरति बखान।
ये सब सम्यक सहित सुभाय, सो श्रुतज्ञान जजों हर्षाय॥ ७॥
ॐ ह्रीं श्री अंगपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खावे जतन जतन तें चले, बोले जतन जततें हले।
आचारांग क्रिया यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ ८॥
ॐ ह्रीं आचाराङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्ययन विधि विनयादिक और, निजपरिणति वेदन जग मौर।
सूत्रकृताङ्ग विषैं यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ ९॥
ॐ ह्रीं श्रीसूत्रकृताङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव स्थान उन्नीस बताये, तथा चार सौ षट् श्रुत गाये।
अग स्थान मांहि यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १०॥
ॐ ह्रीं श्रीस्थानाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होवे जो जो धर्म समान, द्रव्य क्षेत्र कालादिक मान।
समवायाङ्ग यथाविधि कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ ११॥
ॐ ह्रीं श्रीसमवायाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति आदिक स्याद्वाद, एकानेक करे जो वाद।
व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १२॥
ॐ ह्रीं श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अतिशय जिनध्वनि प्रगटाय, समवसरण आदिक गुणगाय।
ज्ञातृकथा अंग में यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १३॥
ॐ ह्रीं श्रीज्ञातृकथाश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादश प्रतिमा विधि जोय और बहुत श्रावक विधि होय।
अंग उपासक में यो कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १४॥
ॐ ह्रीं श्रीउपासकाध्ययनाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक जिन समय मंझार, अन्तःकृत केवल षट् चार।
अन्तःकृताङ्ग मांहि यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १५॥
ॐ ह्रीं श्रीअन्तः कृतदशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक जिन वारें सोय, दश दश मुनि अहमिंद्र जु होय।
अंग अनुत्तर में यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १६॥
ॐ ह्रीं श्रीअनुत्तरोत्पादकदशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गई वस्तु लिख मूठी मांहि, पूछे प्रश्न कहें मुनि ठांहि।
प्रश्न व्याकरण अङ्ग यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १७॥
ॐ ह्रीं श्रीप्रश्नव्याकरणश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अरु अशुभ कर्मफल जान, तीव्र जु मन्द विपाक बखान।
सूत्रविपाक अङ्ग यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही॥ १८॥

ॐ ह्रीं श्रीविपाकसूत्रांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अडिल्ल छन्द॥

व्यय ध्रौव्य अरु उत्पाद द्रव्यलक्षण सही।
गुण पर्यय द्रव्य मांहि और बहुविध कही॥
यह पूरव उत्पाद, मांहि व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यक ज्ञान, जजों थुति आन है॥ १९॥

ॐ ह्रीं श्रीउत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जामैं दुर्नय तथा, सुनय व्याख्यान है।
अस्तिकाय अरु द्रव्य, तत्त्व शुभ ज्ञान है॥
अग्रायण पूरब में, यों व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यक ज्ञान, जजों थुति आन है॥ २०॥

ॐ ह्रीं श्रीअग्रायणीपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य आत्म पर वीर्य, काल वीरज सही।
वीरज उभय अपार, तपो वीरज कही॥
वीरज गुण अनुवाद, मांहि यों ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यक ज्ञान, जजों थुति आन है॥ २१॥

ॐ ह्रीं श्रीवीर्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति वस्त्वादि, स्वभाव विषै सही।
नित्यानित्य अनेक, एक आदिक कही॥
अस्ति नास्ति पूरव में, ऐसो ज्ञान है। सो.। २२॥

ॐ ह्रीं श्रीअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ ज्ञान फल विषय, नाम वर्णन सही।
और अवान्तर भेद, ज्ञान के सब कही॥
ज्ञानप्रवाद सु पूरब, में व्याख्यान है। सो.। २३॥

ॐ ह्रीं श्रीज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद वचन सत असत, उभय अनुभय सही।
वचनगुप्ति अरु भाषा, द्वादश जो कहो॥
सत्प्रवाद सु पूरव, इहविध ज्ञान है। सो.। २४॥

ॐ ह्रीं श्रीसत्प्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय आत्म अभेद, भेद व्यवहार है।
जीव पूज्य वा नहीं, पूज्य निर्धार है॥
इस विधि आत्मप्रवाद, पूर्व मैं ज्ञान है। सो.। २५॥

ॐ ह्रीं श्रीआत्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभेद तिन नाम, बन्ध चवविध सही।
उदय सत्व को आदि, कर्म रचना सही॥
पूरव कर्म प्रवाद, मांहि व्याख्यान है। सो.। २६॥

ॐ ह्रीं श्रीकर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जामें समिति गुप्ति, अनुप्रेक्षादिक कही।
पाप त्यागविधि और महातप अघ नहीं॥
प्रत्याख्यान सु पूरब, इस विधि ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यक ज्ञान, जजों श्रुति आन है॥ २७॥

ॐ ह्रीं श्रीप्रत्याख्यानपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या-साधन मन्त्र, जन्त्र विधि जानिये।
स्वर लक्षण अरु स्वप्न, आदि विधि मानिये॥

पूरव यह विद्यानुवाद, शुभ थान है। सो.। २८॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कल्याणक उत्सव, त्रेसठ पद सही।
ज्योतिष गमन विचार, शकुन आदिक कही॥
यों पूरव कल्याण, वाद में ज्ञान है। सो.। २९॥

ॐ ह्रीं श्रीकल्याणवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुर्वेद सु मन्त्र, जन्त्र तन्तर घने।
इन साधन की कला और महिमा भने॥
पूरव प्राणानुवाद मांहि बहु ज्ञान है। सो.। ३०॥

ॐ ह्रीं श्रीप्राणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द तथा व्याकर्ण, सङ्गीत कला सही।
चौंसठ तिय की कला, काव्य की विधि कही॥
क्रियाविशाल सु पूरव, मति को थान है। सो.। ३१॥

ॐ ह्रीं श्रीक्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक का कथन, मोक्ष व्याख्या सही।
गणितशास्त्र के सूत्र, और सब विधि कही॥
त्रिलोकबिन्दु यह पूर्व महासुख थान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥ ३२॥

ॐ ह्रीं श्रीत्रिलोकबिन्दुपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जोगीरासा छन्द॥

समताभाव सकल जीवन पै, सम दम संयम भावे।
आरत रौद्र ध्यान निरवारै, धर्म शुक्ल उर लावे॥

ऐसो कथन कियो जिस माहीं, सो सामायिक जानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३३॥

ॐ ह्रीं श्रीसामायिकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जामें चौबीसों जिन स्तवन, अतिशय की विधि गाई।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष की और घनी विधि आई॥
अंग चतुर्विंशति स्तवन में, जिन चर्चा पहिचानो।
या अङ्ग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३४॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिस्तवप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा जिन मान लीजिये, भक्ति घनी मन लाई।
तीर्थङ्कर इक को सिर नावत, हाथ जोड़ि कर भाई॥
वन्दनाङ्ग ये नाम जास को, तामें या विधि जानो।
या अङ्ग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३५॥

ॐ ह्रीं श्रीवन्दनाप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जा परमाद थकी अघ उपजे, ताके मेटन भाई।
पश्चाताप विधी ईर्यापथ, पाक्षिक वार्षिक गाई॥
कहा अङ्ग प्रतिक्रमण प्रभू ने, दोषहरण को थानो।
या अङ्ग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३६॥

ॐ ह्रीं श्रीप्रतिक्रमणप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र सुतप की, विनय कीजिये भाई।
गुरुजन गुणिजन को भी कीजे, विनयभाव शुभ लाई॥
इत्यादिक इस विनय अङ्ग में, विनयाचार बखानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३७॥

ॐ ह्रीं श्रीविनयप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरदेवों के वन्दन की विधि, नति आवर्त सु भाई।
प्रदक्षिणा शुद्धी आदिक भी, श्रुति जैसी बतलाई॥
क्रम-क्रम सकल कही है या में, शुभदायक सुखदानी।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३८॥

ॐ ह्रीं श्रीकृतिकर्मप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि यों भोजन पानी लेवें, यों चालें यों सोवैं।
ऐसे वचन कहें मुख सेती, ऐसे अघ मल धोवें॥
मुनि आचार भनो इस मांहीं, दश वैकालिक मानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ३९॥

ॐ ह्रीं श्रीदशवैकालिकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि सहें बावीस परीषह, तिन फल सकल जताये।
देव अचेतन नर तियंक्कृत, जो उपसर्ग बताये॥
उत्तराध्ययन प्रकीर्णक मांही, सकल शुभाशुभ जानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ४०॥

ॐ ह्रीं श्रीउत्तराध्ययनप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आचार मुनीश्वर जोगा, यह जोगा है नाहीं।
हो अयोग्य आचरण कभी तो, दण्डयोग्य मुनि माहीं॥
इत्यादिक अंग कल्पविहारैं, कही सकल चित मानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ४१॥

ॐ ह्रीं श्रीकल्पव्यवहारप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि की किरिया द्रव्यक्षेत्र पुनि, काल भाव यों जोगा।
सोही विधि योगीश्वर ठाने, उपजे आत्म प्रयोगा॥

कल्पाकल्प प्रकीर्णक अंग में, ऐसी वार्ता जानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ४२॥

ॐ ह्रीं श्रीकल्पाकल्पप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकल्पी अरु स्थविरकल्पी, शिक्षा दीक्षा दानी।
पोषण आतम शुद्धि समाधी, किरिया सकल बखानी॥
उत्तमचर्या या आराधन, और घनी विधि जानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ४३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहाकल्पप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतर्निकाय देवकुल में ज्यों पावे सुरतन भाई।
पूजा ज्ञान तपस्या समकित, निर्जर हेतु बताई॥
पुण्डरीक अंग मांहि कह्यो यह, कथन जीव सुखदानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य करि, पूजों मन वच आनो॥ ४४॥

ॐ ह्रीं श्रीपुण्डरीकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किस तप ध्यान थकी मुनि उपजे, अहमिन्दर पद भाई।
किस तपतें वा कौन ध्यानतैं, इन्द्रादिक हो भाई॥
इत्यादिक विधि जामें गाई, पुण्डरीक सो जानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ४५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहापुण्डरीकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जो अघ परमाद बढ़ावे, ता नाशन विधि गाई।
जो जो पाप मिटे जा विधि तें, सो सो सकल बताई॥
नाम निषिधका कहा तास का, ज्ञानागार बखानो।
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो॥ ४६॥

ॐ ह्रीं श्रीनिषिद्धिकाप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ गीतिका छन्द ॥

हैं आठ भेद निमित्त के सो, ज्ञान अद्भुत है सही।
तिस ज्ञान की महिमा लखत ही, भाव मिथ्या ना रही॥
यह भलो ज्ञान अनूप फलदा, होय सम्यक सहित जी।
सो जजों मन वच काय यह श्रुत, अरघ तें थुति कहत जी॥ ४७॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश में रवि चन्द्र तारा, मेघ-पटलादिक सही।
सन्ध्यासमय के चिह्न और, अनेक बातन को कही॥
जो होय इनके निमित सेती, शुभाशुभ सो जानिये।
अन्तरीक्ष हेतुक ज्ञान पूजों, श्रेष्ठ सम्यक मानिये॥ ४८॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि में रत्नादि कंचन, धातु खानि सुजान है।
इन आदि और अनेक रचना, भूमि की पहिचान है॥
सो लखे ऐसी निमित ज्ञानी, शुभाशुभ जाने सही।
भौमको यह निमित्त लखि करि, जजों सम्यक श्रुत सही॥ ४९॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्भौमनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज तियंक देह के शुभ, अशुभ चिह्न सु जानिये।
नख सुकेशादिक सुलखि कर, इष्ट अनिष्ट बखानिये॥
यह अङ्ग निमित्तज्ञान अद्भुत, महासुखदा जोय जी।
मैं जजों अङ्ग निमित्त सम्यक, ज्ञान श्रुत सो होय जी॥ ५०॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यङ्निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन शब्द नर तिर्यञ्च के जो, शुभाशुभ जाने सही।
खर शब्द घूघू काक स्याल, सु सेहिकाकी ध्वनि कही॥

इन आदि वच सुन कहै सुख दुख, निमित्त स्वर सो जानिये।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक्, अर्घ्य मन वच ठानिये॥ ५१॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिल मसा भोंरी गांठ रेखा, पांव कर में जोय है।
तिस निमित्तज्ञान सु सकल जानें, शुभाशुभ जो होय है॥
यह ज्ञान व्यंजन निमित नीको, शुभाशुभ निर्धार जी।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक्, अर्घ्य मन वच काय जी॥ ५२॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्व्यञ्जनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन वृषभ स्वस्तिक कलश वज्र, सुमच्छ इन आदिक सही।
सब जोय लक्षण देखि इनको, शुभाशुभ भाषे यही॥
यह ज्ञान लक्षण निमित आछो, भले फल को दाय है।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक्, अर्घ्य ले सुख पाय जी॥ ५३॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तहँ पट सु भूषण शीश के कर, वर पगों के जान जी।
तिनको जु काटें मूषकादिक, भेद तिनको आन जी॥
यह भेद शुभ अर अशुभ भाखै, देखि के सुख दुख कहे।
यह छिन्न निमित्त मुजान नीको, पूज्य मन वच तन चहे॥ ५४॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लखे सुपना शुभाशुभ को, भेद सुख दुख आन जी।
इन आदि अङ्ग अनेक समझे, सकल भेद सु आन जो॥
यह ज्ञान स्वप्न निमित्त जीको, बड़े अतिशय धार जी।
सो जजों सम्यक सहित मन वच, श्रुतज्ञान सु सार जी॥ ५५॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्स्वप्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जोगीरासा छन्द ॥

ये ही आठों निमित्त ज्ञान हैं, जग में अचरजकारी।
तिनको देखि भरम सब जावे, और घने गुण धारी॥
सम्यक जुत यह महाज्ञान-नद, याको मुनि अवगाहैं।
ऐसो लखि के मैं भी मन वच, अर्घ्य जजों हरषाहैं॥ ५६॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यङनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक असंखे क्षेत्र सुजाने, काल असंखो भाई।
द्रव्य लखे परमाणु सूक्षम, गांव आदि अधिकाई॥
ऐसी सर्वावधी ज्ञान लखि, मुनि बिन और न पावे।
तातैं मैं या ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवै॥ ५७॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक असंख्यो जाने क्षेत्रो, वरष असंख्यो कालो।
कार्माण तन सुख में जोवे, द्रव्य अपेक्षा वालो॥
परमावधि सु ज्ञान बड़ा है, सर्वावधि लघु पावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवै॥ ५८॥

ॐ ह्रीं श्री परमावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोक क्षेत्र की जाने, काल पल्य परिमाने।
द्रव्य अपेक्षा कार्माण तन, भाव यथावत् जाने॥
अति उत्तम यह ज्ञान विषय है, देशावधी जनावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवे॥ ५९॥

ॐ ह्रीं श्री देशावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपजे जबतें अवधिज्ञान उर, आप महा सुखदाई।
तबही तैं यह बढ़े आयु लों, नाहीं कबहुँ घटाई॥

वर्धमान यह अवधिज्ञान है, समकित जुत मुनि पावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवै॥ ६०॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमानसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हीयमान जो अवधि कह्यो है, ताको यह सोभावा।
उपजे तब ही तें घटवो कर, अंश सकल निरदावा॥
याका अंश बढ़े नहिं कबहूं, जिनवानी यों गावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवे॥ ६१॥

ॐ ह्रीं श्री हीयमानसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपजे जो भव में उर आवे, अवधिज्ञान सुखकारी।
आयु अन्त तक रहे साथ में, पीछे परभव लारी॥
अनुगामी है नाम इसी का, अवधिज्ञान कहलावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवे॥ ६२॥

ॐ ह्रीं श्री अनुगामिसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब जिस क्षेत्तर में उपजे उर, ज्ञान अवधि सुखदाई।
तिसही थानक में थिति जाकी, और क्षेत्र नहिं जाई॥
अवधिज्ञान यह अननुगामिनी, परभव संग न जावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवे॥ ६३॥

ॐ ह्रीं श्री अननुगामिसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने अंशों में पैदा हो, उतना ही प्रिय भाई।
आयु अन्त लों तहां रहे थिर, घट बढ़ हो न कदाई॥
ज्ञान अवधि यह जान अवस्थित, सम्यक् रूप लहावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवे॥ ६४॥

ॐ ह्रीं श्री अवस्थितसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान उपजें जबतें उर, कबहूँ घट बढ़ जाई।
अंश बढ़े कबहूँ बहु जानो, कबहूँ अंश घटाई॥
यह अनवस्थित अवधिज्ञान है, सम्यक जुत फल पावे।
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिग आवे॥ ६५॥

ॐ ह्रीं श्री अनवस्थितसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरल भाव मन विकलप जाने कुटिलभाव नहिं जाने।
उत्तम सात आठ योजन भव, क्षेत्र काल की जाने॥
ऋजुमति मनपर्यय यों जाने, मन चिन्तित प्रिय भाई।
पर मन के विकलप जो जाने, ताहि जजों सुखदाई॥ ६६॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमतिमनः पर्ययसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मनपर्यय ज्ञानी, पर के मन की पावे।
सरल गूढ जो मन के विकलप, सारे भेद लखावे॥
क्षेत्र अढाई द्वीप काल भी, पल्य असंखो जानो।
ऐसे विकलप जाने पर मन, ज्ञान पूज्य सो जानो॥ ६७॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलमतिमनः पर्ययसम्यग्वधिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनलोकनिःसीम अलोक कि, काल तीन की जाने।
जीव अजीव तत्त्व वरतेंगे, वर्ते बरतत जाने॥
गुण पर्याय लसैं सो सो तब, जो जो स्वांग बनाये।
इत्यादिक सब जाने केवल, ज्ञान जजों थुति लाये॥ ६८॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसे मतिश्रुत अवधिज्ञान लखि, मनपर्यय सुखदाई।
केवलज्ञान अनादि अपारी, जानत खेद न पाई॥

या विधि पांचों ज्ञान सुसम्यक, पूज्य कहे जिनवानी।
तातैं अर्घ्य बनाय जजों ये, मोहि मिलें सुखदानी॥ ६९॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यकपञ्चज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला ॥

दोहा- दीखे ज्ञान थकी सकल, ज्ञानभानु सो जान।
मैं पूजों मन वचन तन, मो उर प्रकटी आन॥

चाल मुनियानन्दी

ज्ञान की आन सब लोक परमान जी,
ज्ञान ही कर्म को मूल तें ढाय जी।
ज्ञान पुण्य पाप की राह बतलाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ १॥
ज्ञान ही देय शिव स्वर्ग थानक मही,
ज्ञान तै चक्रधर अर्धचक्री कही।
ज्ञान ही लोक में सर्व सुखदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ २॥
ज्ञान तैं कर्म अरि जीना जान है,
ज्ञान तैं आपने पाप जिय हान है।
ज्ञान ही लोक का गुरु हितदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ३॥
ज्ञान तैं वृत्त तप ध्यान शुभ होय जी,
ज्ञान ही सकल उर भरम को खोय जी।
ज्ञान अघमैल को धोय सुध लाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मन आय है॥ ४॥

ज्ञान चक्षू भले गूढ़ अर्थ जानिये,
ता थकी भेद शुभ वा अशुभ जानिये।
ज्ञान-नद वारि तें पापमल जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ५॥
ज्ञान ही लोक का श्रेष्ठ रत्न जानिये,
ज्ञान ही धर्म सब जीवहित आनिये।
ज्ञान जग-कर्म-वन नाश करवाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ६॥
ज्ञान तैं लोकदु:ख जाय भय आन की,
ज्ञान तैं मोक्षतिय वरत है जान जी।
ज्ञान रवि होय मिथ्यात्वतम जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ७॥
ज्ञानसम कर्मक्षयकर नहीं जानिये,
मोह मदहरन को भलो भट मानिये।
ज्ञान सों सकल उर दु:ख मिट जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ८॥
ज्ञान जग भेद सब जान भ्रम भान जी,
ज्ञान तें मिटे उर क्रोध छल मान जी,
ज्ञान उर होय तब धर्म मन भाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ९॥
ज्ञान मति भेद शत तीन छत्तीस जी,
ज्ञान श्रुत अंग पूर्व भेद सर्व ईश जी।

अवधि के भेद त्रय तथा बहु थाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ १०॥
मनपर्यय ज्ञान के भेद दो जानिये,
ज्ञान शुद्ध केवला एकविध मानिये।
इन विषैं गुन घना भलो फलदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥ ११॥

दोहा- देव धर्म गुरुज्ञान तैं, पावे जिय शिवधाम।
तातैं मैं शुध ज्ञान को, मन वच करों प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति सम्यग्ज्ञानपूजा समाप्त:॥

श्री सम्यक्चारित्र पूजा प्रारम्भ

॥ अडिल्ल छन्द॥

पंच महाव्रत सार समिति पाँचों सही,
गुप्ति तीन मिल तेरहविध जिनध्वनि कही।
यों ही शुभ चारित्र भवोदधि नाव है,
सो मैं पूजों थाप यहां कर चाव है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपाम:।

जोगीरासा की चाल

क्षीर समान मनोज्ञ सुनिर्मल, त्रस जीवन बिन जानो।
उज्ज्वल क्षीरोदधि को जल ले, देखत उर हरषानो॥

कनकझरि में धरकर लाया, भक्ति धार सुखदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चन्दन अगर मिलायो, नीर सुसंग घिसायो।
ताकी गंध मत्त हो अलिगण, चउ-दिश से उड़ आयो॥
ऐसो चन्दन गंधसहित जो, कनकपात्र धरि लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ २॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल मुक्ताफल से, खण्ड बिना चुनवाये।
श्रेष्ठ सुगन्धित विविध जाति के, जो मन अति हरषाये॥
ऐसे अक्षत कनक थाल धरि, प्रचुरभक्ति उर लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ३॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल मनोहर अति सुखदाई, नाना रंग के प्यारे।
गंध महा जिन मांहि घनी है, धार सुभग आकारे॥
तिन फूलन की माला करि मैं, भक्ति घनी मन लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ४॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानारस मिलवाय बनाये, चरु अति ही सुखदाई।
मोदक आदि मनोहर जानो, ज्यों नैवेद्य सुगाई॥
सो हम नीके पातर में धरि, विनयसहित पुनदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ५॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रतन तने करि लीने, घनी ज्योति बहु धारी।
कनकथालभरि निजकर लायो, करन आरती भारी॥
मन वच तन शुभ भावन से मैं, भक्ति हिये बहु लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ६॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप भली दाहै तन वह्नी, तातें भगति पियारी।
नानागंध तिस मांहि मेलि के, कीनी अति सुखकारी॥
ऐसे दशधा धूप हाथ ले, अग्नी मांहि जलाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ७॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो।
और अनेक भले फल करले, आयो अति हरषानो॥
नीके पात्र धार के तन मन, भावभक्ति सब लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ८॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षतसुपहुप चरु, दीप धूप फल प्यारे।
मिला सर्व को अर्घ्य बनायो, सुन्दर पात्र पसारे॥
अपने कर ले करों आरती, नानाविध गुण गाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई॥ ९॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य॥ चाल जोगीरासा॥

जिनआज्ञाजुतमुनि वच बोले, सुन सबजिय सुख पावें।
हिंसावचन नहीं ऋषि भाखें, करुणा अति मन ल्यावें॥

शुद्ध अहिंसाव्रत तब होवे, वच अपने यश राखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १॥
ॐ ह्रीं वचनाहिंसामहाव्रत सहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन से हिंसाभाव निवारें, करुणाजुत मन धारी।
महावरत तब होय अहिंसा, मन राखें हितकारी॥
मुनि किरपानिधि सब जग बंधू, मन तें दोष न भाखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे॥ २॥
ॐ ह्रीं मनोहिंसारहिताहिंसामहाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
षट्कायिक जीवन पीड़ाहर, मारग देख सु चालें।
सूक्षम बादर सब पर करुणा, चार हाथ लखि हालें॥
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, यह जिनवाणी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ३॥
ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
पिछीकमंडलु पुस्तक निजकर, जोवें धरें उठावें।
दयाभाव सब जीवन ऊपर, तातैं यह विधि लावें॥
महावरत तब शुद्ध अहिंसा, त्रस थावर की राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे॥ ४॥
ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपसमितियुताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जीवदया के हेतु महामुनि, दोष हटाकर खावें।
समतासागर सब जियबंधू, खान पान सुध पावें॥
तबहि अंहिसाव्रत की शुद्धी, होय इसी विधि राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे॥ ५॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिसंहिताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रथम महाव्रत जान अंहिसा, सो या विधि समझायो।
पांच भावना ताकी ऐसी, इनसे शुद्ध बतायो॥
यही अहिंसा महासुव्रत है, सब जीवन पत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ६॥
ॐ ह्रीं पंचभावनायुताहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
क्रोधसहित वच असत कहा है, करे प्रतीति न कोई।
तातैं क्रोध बिना सच भाषे वचन महाशुभ होई॥
ऐसो सत्य-महाव्रत धारी, जग गुरुराज सुभाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ७॥
ॐ ह्रीं क्रोधरहितसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
लोभ तनै वश सांच न बोले, ना परतीति सुभाई।
लोभ बिना परमारथ भाषे, सत्य-वचन सुखदाई॥
या विध सत्यमहाव्रत उत्तम, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ८॥
ॐ ह्रीं निर्लोभभावनायुत-सत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
भयजुत प्राणी सांच न बोले, कहे झूठ उकताई।
भय से भीत अन्यथा भाषे, यह निश्चय लखि भाई॥
भीति बिना जो होय महाव्रत, सो जिय का सम राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ९॥
ॐ ह्रीं भयरहितसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
हास्य विषैं वच सांच न जाने, हास्य सत्य को घाते।
हास्य तहां सतवन न उपजे, हास्य बिना सत पावे॥

तातैं हास्य बिना जु महाव्रत, शुद्ध होय जिन भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १०॥
ॐ ह्रीं हास्यरहितसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वच शास्त्रानुकूल ही कहना, वच अनुवीचि प्रमानो।
शास्त्रविरुद्ध कहे नहिं कबहूँ, सत्य-विरतधर मानो॥
जो अनुवीचि वच प्रिय होवे, सत्य-महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ११॥
ॐ ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पांच भावना सत्यविरत की, पाल कहे सच वयना।
सत्य महाव्रत-सहित भावना, पाप हरे सुख झरना॥
ऐसे सत्य-महाव्रत की सो, पल पल महिमा राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १२॥
ॐ ह्रीं पंचभावनायुताहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सूने घर में नाहीं जावे, जानें चोरी त्यागी।
भूमि परी विसरी पर वस्तु, लेय नहीं विनरागी॥
सो अचौर्य महाव्रतधर यति, भाव प्रतिज्ञा राखे।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे॥ १३॥
ॐ ह्रीं शून्यगृहप्रवेशरहिताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऊजड़गृह में वास करे तो, चोरी दूषण पावे।
तातैं छोड़े घर के मांही, मुनि नहिं ध्यान लगावे॥
व्रत अचौर्य यह जान महाव्रत, निज मन वश में राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १४॥
ॐ ह्रीं निर्जनगृहवासरहिताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजथल पर का आना रोके, सो चोरी अघ पावे।
व्रत अचौर्य में यातें यतिजन, औगुण मोटो लावे॥
शुद्ध अचौर्य महाव्रत जानो, सो यह दोष न राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १५॥
ॐ ह्रीं परोपरोधाकरणयुताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाता दे सो भोजन ले मुनि, आप न सेन बतावे।
देय इशारा भोजन लें तो, चोरीदूषण पावे॥
दोष बिना लीये शुध भोजन, सो अचौर्यव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १६॥
ॐ ह्रीं भैक्ष्यशुद्धियुताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपस माहीं धर्मी जनसों विसम्वाद ना करही।
समता धार त्याग यह दूषण व्रत अचौर्य मन धरही॥
धर्मी से गोवत्सप्रीतिसम प्रीति किये सुख चाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १७॥
ॐ ह्रीं सधर्माविसंवाददोषरहिताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच भावना ऐसी इन जुत, व्रत्त अमल सु कहावे।
इन्हें भुलाये चोरि दोष हो, नाहिं निमित्त मिलावे॥
दोष गये शुध होय अचोरी महाविरत ध्वनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १८॥
ॐ ह्रीं पंचभावनायुताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नारिकथा सुनके जो मनमें, तिय अनुराग बढ़ावे।
ताको शील लहे दूषण को, या बिन शील रहावे॥

रामाराग कथा से वर्जित, ब्रह्मचर्य शुभ भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ १९॥
ॐ ह्रीं स्त्रीरागकथाश्रवणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यंनि.स्वाहा।
अति सुन्दर नारी तन देखे, बार बार धरि रागा।
ताके शील सुरत्न विरत को, मोटो अवगुन लागा॥
ऐसे दोष बिना सुशील व्रत, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २०॥
ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहराङ्गनिरीक्षणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।
मुनिपद पहले राजसमय में, भोग किये थे भारी।
तिनकी याद किये से दूषण, शील लहे दुखकारी॥
पूर्वरतानुस्मरण रहित यों, शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २१॥
ॐ ह्रीं पूर्वरतानुस्मरणरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भोजन नाहिं गरिष्ट करें मुनि, शील सुरक्षा काजे।
दधि घृत मेवादिक के खाये ब्रह्मचर्य व्रत लाजे॥
तातैं ऐसा भोजन तजि के शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २२॥
ॐ ह्रीं वृष्येष्टरसत्यागसहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।
अपने तन के मज्जन चूरन ह्वन धोवना लावे।
ऐसी किरिया जो मुनि राखे शील दोष को पावे॥
तातें तन श्रृङ्गार रहित जो शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २३॥
ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्काररहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

पंच भावना ऐसी पालें, शील करन शुध भावे।
ताको मुक्ति मनोहर रमणी, वेगहिं पास बुलावे॥
ऐसो शील महाव्रत नीको, जो मुनि दृढ करि राखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २४॥
ॐ ह्रीं पंचभावनायुतब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
कोमल कठिन चीकनो रूखो, लघु शीतोष्ण महानो।
ऐसे आठ विषय सों विरकत, परिग्रहत्याग सुजानो॥
आतम के अनहित के कारण, तामें मन नहिं राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २५॥
ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय शुभाशुभ विषयरहित परिग्रहत्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
खट्टा मीठा कडुआ जानो, अरु कषायला भाई।
और चरपरा पांच विषय में, रसना बहु ललचाई॥
ये रसना के भोग शुभाशुभ, भोग परिग्रह राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २६॥
ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय शुभाशुभ विषय रहित परिग्रह त्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नासा इन्द्रिय विषय शुभाशुभ भोग परिग्रह सोई।
गंध विषय ललचाय जीव ते, परिग्रही अतिमोही॥
तातैं इनके त्यागि भये जे, परिग्रहत्यागी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २७॥
ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय शुभाशुभ विषय रहित परिग्रह त्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र सुजानै लाल पीत वा, श्याम सब्ज अरु श्वेता।
तामें राग द्वेष उपजावे, परिग्रही जनचेता।
इनिको त्याग सुत्याग परिग्रह, मन वच तन कर राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २८॥

ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रिय शुभाशुभ विषय रहित परिग्रह त्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन शब्द हैं सचित अचित अरु, मिश्र शब्द सुखदाई।
इनमें राग रु द्वेष करै मुनि, सोइ परिग्रह भाई॥
तातैं इनके त्यागे परिग्रह, त्याग महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ २९॥

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रिय शुभाशुभ विषय रहित परिग्रह त्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांच भावना पंचम व्रत की, त्याग कहो इन मांही।
इन जुत परिग्रहत्याग महाव्रत, शुद्ध होत शक नाहीं॥
पांच भावना सहित होय जो, महाव्रती मुनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥ ३०॥

ॐ ह्रीं पंचभावनायुतपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अडिल्ल छन्द॥

चार हाथ भू शोध, पांव मुनिवर धरें।
इत उत देखन त्याग, काय निज वश करें॥
सो शुध ईर्यासमिति महा सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३१॥

ॐ ह्रीं यत्नतत्रावलोकनदोषरहितेर्यासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जब मुनि करें विहार, दयानिधि सार जी।
चालें नहीं सुताव, बड़े पग धार जी॥
ऐसो दोष निवार, समिति पग धार हैं।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३२॥

ॐ ह्रीं शीघ्रगमनदोषरहितेर्यासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागवचन सुन यती, राह चलते नहीं।
राग द्वेष कर चंचल, चित्त करते नहीं॥
तातैं ईर्या समिति, शुद्ध सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३३॥

ॐ ह्रीं पथिगमनकाले रागवचनश्रवणात्चित्तचांचल्यदोषरहितईर्या समिति सहित सम्यक्चारित्रार्यार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राह चलत वच दुष्ट, श्रवण करके सही।
द्वेषभाव करि करें, चित्त को चल नहीं॥
तब शुभ ईर्या समिति, होय हितदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३४॥

ॐ ह्रीं मार्ग गमनकाले दुष्टवचन श्रवण दोषरहित-ईर्या समिति सहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राह चलत श्री मुनिवर, कबहु न यों करें।
पड़ी वस्तु पग कर तें, कबहु न ले धरें॥
सो यह दोष निवार, समिति शुध लाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३५॥

ॐ ह्रीं मार्गस्थवस्तुग्रहणदोषरहितेर्यासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दोष तें रहित, मुनि मग जाय हैं।
जूना के परमान, भूमि दिखवाय है।
ऐसी समिति दयालु, भाव कर लाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३६॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहितेर्यासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जिस देश मंझार, वस्तु को नाम है।
सो ही कहना सत्य, वचन शुभधाम है॥
जनपद सत् कथनीय, समिति सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥ ३७॥

ॐ ह्रीं जनपदसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रौढ़िक जाका नाम, सकल जन यों कहे।
सोई कहना संवृत्ति, सत सुधि में रहे॥
ऐसी भी वच भाषा, समिति सु जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये॥ ३८॥

ॐ ह्रीं संवृतिसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्र मनुज हय हाथी, वृष के कीजिए।
फिर तिनको नर पशु, नाम रख लीजिये॥
यही थापना सत्य, समिति वच जानिये॥ या०॥ ३९॥

ॐ ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाको जग में नाम, प्रसिद्ध सुं गाइये।
सोई कहना नाम, दोष नहिं पाइये॥
नाम सत्य यह सार, समिति वच जानिये॥ या०॥ ४०॥

ॐ ह्रीं नामसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह रङ्ग काला पीला लाल हरा सही।
ऐसा कहना रूप, सत्य भाषा सही।
ये ही भाषा सत्य वचन मन आनिये॥ या०॥ ४१॥

ॐ ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहै पदारथ बड़ा यहै छोटा सही।
कहे अपेक्षा वचन घने परगट मही॥
यही सत्य परतोति समिति वच जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये॥ ४२॥

ॐ ह्रीं प्रतीत्यसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैगमनय की रीति वचन सो भाषिये।
कर मन ठीक जु वस्तु हिये में राखिये॥
सत है सो व्यवहार समिति वच आनिये॥ य०॥ ४३॥

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्र विषैं बल ऐसा भू उल्टी करे।
भूमी जानि अनादि नाहिं कबहूँ टरे॥
ऐसा कहना सम्भावित सत जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, पूज्यतम मानिये॥ ४४॥

ॐ ह्रीं संभावनासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु असंखे द्वीप नरक सुर थल सही।
कंदमूल में जीव अनन्ते जिन कही॥
भाव सत्य संजोय समिति वच जानिये॥ या०॥ ४५॥

ॐ ह्रीं भावसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

का को किसकी उपमा देकर भाषिये।
ज्यों दानी सुरवृक्ष जगत में आंकिये॥
सो उपमा सत जान समिति वच ठानिये॥ या० ॥ ४६ ॥

ॐ ह्रीं उपमासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राण जांय तो जांय असत भाषें नहीं।
भाषें तो सत्य वैन जिसे जिन ध्वनि कही॥
सो ही भाषा समिति भव्य उर आनिये॥ या० ॥ ४७ ॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पात्रनिमित्त सु भोजन जो दाता पचे।
तो यह दोष 'उद्देशिक' दाता सिर रचे॥
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी॥ ४८ ॥

ॐ ह्रीं औद्देशिकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

पात्र जनों को देख रसोई जो करे।
दाता 'अध्यदि' दोष आपने सिर धरे॥
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं अध्यदिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

जो मुनि को दे भोजन अचित्त मिलायकें।
'पूतिकर्म' यह दोष सुदातृ उपाय के॥ सो० ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं पूतिकर्मदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि को भोजन देय असंयमि साथ जी।
तो दाता के दोष 'मिश्र' विख्यात जी ॥ सो० ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

थानान्तर भोजन दे मुनि को लायकें।
तो 'स्थापित' ले दोष दातृ अधिकाय के॥ सो० ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं स्थापितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

देव पितर को कियो मुनी को दे सही।
तो दाता 'बलि' दोष आप सिर ले सही॥ सो० ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं बलिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

वेग वेग वा धीरे मुनि को आहार दे।
'प्रावर्तित' अघ सोय दातृ के सिर बंधे॥ सो० ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि भोजन का थान प्रकाशित जो करे।
'प्राविष्करण' सु दोष दातृ निज शिर धरे॥ सो० ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

विद्या-क्रीत अहार मुनी को दान दे।
'क्रीतदोष' तब दाता के ही शिर बधे॥
सो भोजन मुनि तजे एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं क्रीतदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

ऋण कर कृत आहार मुनी को दे सही।
सो दाता 'ऋण' दोष आप सिर ले कही॥ सो० ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं प्रामृष्यदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

निजी अन्न बदलाय दान मुनि को करे।
'परिवर्तन' अघ सोय, दातृ सिर पर धरे॥ सो० ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं परिवर्तनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

अन्य आम तें आय दान मुनि को करे।
'अभिघट' कही अघ सोय आप सिर पर धरे॥सो०॥५९॥
ॐ ह्रीं अभिघटदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बधी वस्तु मुख खोल दान दे लाय जी।
'उद्भिन' अघ सिर दातृ लेय अति भाय जी॥सो०॥६०॥
ॐ ह्रीं उद्भिनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऊपर खण की वस्तु लाय मुनि दान दे।
'मालारोहण' नाम दातृ अघ सिर सु ले॥सो०॥६१॥
ॐ ह्रीं मालारोहणदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रास और भयकार दान मुनि को करे।
दोष 'अच्छेद्य' सुनाम आपने सिर धरे॥ सो०॥ ६२॥
ॐ ह्रीं अच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाको धनी न होय दान दे और जी।
'अनीशार्थ' अघ दातृ लहे अति तिस ठौर जी॥सो०॥६३॥
ॐ ह्रीं अनीशार्थदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षोडश दोष सुजान मुनी आहार में।
दाता पालें जान सोय बुध सार में॥
सो भोजन मुनि तजे एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदायजी॥६४॥
ॐ ह्रीं षोडशोद्गमदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥ चाल जोगीरासा॥

जाय यती दाता के घर में, बालक नाहिं खिलावे।
नहिं शृङ्गारे नहिं पुचकारे, बालक को न रमावे॥

'धात्री' दोष तजें मुनिवर यह समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ ६५॥
ॐ ह्रीं धातृदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाता के घर जाय यतीश्वर इत उत बात बढ़ावे।
देशान्तर की कहे वार्ता तो मुनि दोष बढ़ावे।
'दूत' दोष यह तजें महामुनि समिति एषणा पाले॥ या०॥ ६६॥
ॐ ह्रीं दूतदोषदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'निमितज्ञान' की बात कहे मुनि दाता को सुखदाई।
भोजन फेर गहे घर वाँके तो सिर दोष चढ़ाई॥
निमितदोष ऋषिराज तजें यह समिति एषणा पाले॥ या०॥ ६७॥
ॐ ह्रीं निमित्तदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाता के घर जाके मुनिवर कह प्रभुता की बातें।
इस विधि से सुन्दरतम भोजन कबहुँ यतीजन पाते॥
यह 'आजीवक' दोष तजें यति समिति एषणा पाले॥ या०॥ ६८॥
ॐ ह्रीं आजीवकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मुनि दाता को सुसुहावन बात कहे घर जाई।
भोजन ताके आप करे ऋषि तो अघ लेय उपाई॥
दोष 'वनीपक' तजि मुनि याकी समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ ६९॥
ॐ ह्रीं वनीपकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मुनि दाता के घर जाकर औषधि भेद बतावे।
नाड़ी देख सुरोग बतावे फिर भोजन को खावे॥

दोष 'चिकित्सा' होय त्याग के समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७० ॥
ॐ ह्रीं चिकित्सादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जो मुनि भोजन लेय क्रोधयुत दाता के घर जाई।
तो मुनि के शिर दोष चढ़त है सो भोजन दुखदाई ॥
'क्रोध' दोष यह तजे मुनीश्वर समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७१ ॥
ॐ ह्रीं क्रोधदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
हम तपसी दीरघकुल धारी ज्ञान धरें अधिकाई।
यों कह भोजन ले दाता घर मानसहित हो भाई ॥
'मानदोष' यह तज के मुनिवर समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७२ ॥
ॐ ह्रीं मानदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भोजन को मुनि जाय नगर में दाता के घर जाई।
भोजन लेय कपट कर चित में नाना छल दिखलाई ॥
'मायादोष' तजें इसको मुनि समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७३ ॥
ॐ ह्रीं मायादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
लोभविवश हो दाता के घर ते भोजन यति जाई।
स्वादलम्पटी रसना पीड्यो तो शिर दोष चढ़ाई ॥
'लोभ' दोषको तजके यतिवर समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले ॥ ७४ ॥
ॐ ह्रीं लोभदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भोजन पहले दाता की थुति जो मुनिराज उचारे।
तो अपने तप संयम माहीं दूषण ही निरधारे ॥
'पूरवथुति' अघ को तज के यों समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले ॥ ७५ ॥
ॐ ह्रीं पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन दाता के घर लें मुनि पीछे यह विधि लावे।
दाता की थुति करके भारी आप दोष लिपटावे ॥
पीछे थुति यह दोष त्याग मुनि समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७६ ॥
ॐ ह्रीं पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
मुनि भोजन ले जिस दाता घर ता प्रसन्नता काजे।
अपनी विद्याएँ दिखला के दोष आपको साजे ॥
'विद्यादोष' त्याग यह मुनिवर समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७७ ॥
ॐ ह्रीं विद्यादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
मन्त्र तन्त्र जंत्रादिक अतिशय चमत्कार बतलावें।
पीछे भोजन लेय यतीश्वर तो शिर पाप बंधावें ॥
'मन्त्रदोष' यह तज के योगी समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७८ ॥
ॐ ह्रीं मन्त्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जो मुनि काजल नेत्रनि को दे चूरण आदि बतावे।
यों कर भोजन ले दाता घर तो सिर दोष बंधावे ॥
'चूरण' अघ को छोड़ महामुनि समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ७९ ॥
ॐ ह्रीं चूर्णदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
वशीकरण आदिक की युक्ती गृहियों को दिखलावे।
पीछे से मुनि भोजन लेवे तो संयम मल पावे ॥
'मूलकर्म' दूषण तज के यह समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले ॥ ८० ॥
ॐ ह्रीं मूलकर्मदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भोजन भक्ष्य अभक्ष्य किसो है या शंका करि खावे।
तो मुनि अपने संजम में यों शंकित दोष लगावे ॥

ऐसो 'शंकित' दोष त्याग मुनि समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८१ ॥
ॐ ह्रीं शंकितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

दाता के कर चिकने होवें चिकने वासन जोवें।
तामें भोजन जो मुनि लेवें तो सदोष वे होवें ॥
'मृक्षितदोष' तजें यह मुनिवर समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८२ ॥
ॐ ह्रीं मृक्षितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

सचित वस्तु पर रक्खा भोजन मुनिवर कबहुँ न खावें।
अपने संजम भार लाभ या सावधान चित लावें ॥
यह 'निक्षिप्त' दोष तजिके मुनि समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८३ ॥
ॐ ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन ढांके सचित वस्तु सों तो यति नाहीं खावे।
ऐसो कारण आय मिले तो भोजन ही तज जावे ॥
'पिहित' दोष को छोड़ यतीश्वर समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८४ ॥
ॐ ह्रीं पिहितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

पूरव नेह थकी भोजन लें तो मुनि दूषण पावे।
मोह वचन मुखतें आलापे सो संयम खो जाये ॥
'अहार दोष' यह त्याग यतीश्वर, समिति एषणा पाले ॥
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले ॥ ८५ ॥
ॐ ह्रीं अहारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

सूतक रोगी वृद्ध बाल जो जलती अग्नि बुझावे।
गर्भवती तिय होय नपुंसक इनि कर मुनि नहिं खावे ॥
'दायकदोष' तजे मुनिनायक समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८६ ॥
ॐ ह्रीं दायकदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

आंचल सों बालक तज नारी जो मुनि को पड़गाहे।
तो याके कर को भोजन ऋषि आय कबहुँ नहिं खाये ॥
'सम्व्यवहरणदोष' तजिके मुनि समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८७ ॥
ॐ ह्रीं सम्यवहरणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तु सचित्त अचित्त मिली जो भोजन में मुनि खावे।
तो उसके अति दूषण लागे जग में निन्दा पावे ॥
'मिश्रदोष' यह तजे मुनीश्वर समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८८ ॥
ॐ ह्रीं उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

जली और अधपक्की चीजें वा अप्रासुक लाई।
भोजन में यतिवर को देवे तो लेवें न कदाई ॥
दोष 'अपरिणत' को मुनि त्यागें समिति एषणा पाले ॥ या० ॥ ८९ ॥
ॐ ह्रीं अपरिणतदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

पात्र खड़ी हड़ताल गेरु से यदि लिपटा हो भाई।
भाजी खिचड़ी खड़ी आदि या लिपटी देय दिखाई ॥
'लिप्तदोष' माने सत साधू समिति एषणा पाले ॥
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले ॥ ९० ॥
ॐ ह्रीं लिप्तदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तु हाथ से द्रवित होय जो या प्रदत्त तज खावे।
तो मुनिनायक अपने संयम माहीं दोष लगावें ॥
त्यजनदोष यह तजके मुनिवर समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले ॥ ९१ ॥
ॐ ह्रीं परित्यजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

उष्ण माहिं शीतल शीतल में उष्ण मिला कर खावें।
तो अपनी सत संजम नीको ताके दोष लगावे॥
दोष 'संयोजन' नाम त्याग गुरु समिति एषणा पाले॥ या०॥ ९२॥
ॐ ह्रीं संयोजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
बत्तिस ग्रास मुनी का भोजन सो ही उत्तम होई।
तासें अधिक न मुनिवर खावे आज्ञा-भंग न सोई॥
'अप्रमाण' इस अध को छोड़े समिति एषणा पाले॥ या०॥ ९३॥
ॐ ह्रीं अप्रमाणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
मीठो भोजन रुचि से खावे दाता को जु सरावे।
बहु आसक्त होय भोजन ले सो सिर दोष मढावे॥
दोष 'अंगार' तज गुरु याको समिति एषणा पाले॥ या०॥ ९४॥
ॐ ह्रीं अंङ्गारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
जो भोजन मन चाहत नाहीं खावत अरुचि कराहे।
दाता की निन्दा फिर ठानें तो निज संयम दाहे॥
'धूमदोष' याको मुनि त्यागें समिति एषणा पाले॥ या०॥ ९५॥
ॐ ह्रीं धूमदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- ऐसे तेइस दुगुन मल, टालत है मुनिराय।
तब भोजन करते सही, ते गुरु जजों सहाय॥ ९६॥
ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
मुनि के भोजन करते नभ से काक बीट कर जावे।
देखे मुनि तो भोजन छांड़े हिये खेद ना पावे॥

'काकदोष' यह तजें यतीश्वर समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ ९७॥
ॐ ह्रीं काकान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
अपने पग जो अशुभ वस्तु से लिपटे होंय कदाई।
देखे मुनि तो भोजन छांड़े अन्तराय गिन भाई॥
दोष 'अशौच्य' तजे मुनि याको समिति एषणा पाले॥ या०॥ ९८॥
ॐ ह्रीं अशौच्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
जो मुनि भोजन को मग जाते करता वमन निहारे।
तो तादिन आहार तजे यह अन्तराय सु विचारे॥
'छर्दि' दोष को तजके मुनिवर समिति एषणा पाले॥ या०॥ ९९॥
ॐ ह्रीं छर्द्यन्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
रुदन करन्ते परको देखे भोजन-बेला कोई।
अन्तराय तो होय मुनि को भोजन करे न सोई॥
'रुदनदोष' यह तजे महामुनि समिति एषणा पाले॥ या०॥ १००॥
ॐ ह्रीं रुदनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
निज पर का मुनि लोहू देखें भोजन बेला कोई।
अन्तराय तो लहें सुगुरुवर समताधर जित सोई॥
'रुधिरदोष' यह तजे मुनीश्वर समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०१॥
ॐ ह्रीं रुधिरदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।
अश्रुपात निज पर के देखे भुक्तिकाल मुनिराई।
अन्तराय तो गिनें जगद्गुरु करुणासागर भाई॥

'अश्रुपातदूषण' यह तज के समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ १०२॥

ॐ ह्रीं अश्रुपातान्तरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन हेतु पात्र को जंघा ऊपर गेहि चढ़ावे।
तो मुनिनाथ तजें भोजन को अन जल पियें न खावै॥
'जंघानाम' दोष तजके यति समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०३॥

ॐ ह्रीं जंघास्पर्शान्तरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

साधु हाथ यदि घुटने नीचे का अस्पर्श लहावे।
अन्तराय तो मानें यतिवर भोजन-गृद्धि हटावे॥
तज 'प्रावृत्यदोष' को निश्चय समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०४॥

ॐ ह्रीं प्रावृत्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

नाभीतल शिर नीचा करके द्वार निकाल बुलावे।
अन्तराय तो माने यतिवर आगमविधि को ध्यावे॥
'नाभ्यधोनिर्गमन' दोष तजि समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०५॥

ॐ ह्रीं नाभ्यधोनिर्गमनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

तजी वस्तु भोजन में आई निश्चय में जब जाने।
अन्तराय माने सत्साधू आकुलता नहिं आने॥
'प्रत्याख्यात' जु दोष तजे यह समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०६॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यातान्तरायदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

जीवघात निज पर कर सेती भोजन-बेला होई।
तो मुनि देख तजे भोजन को दयाभाव धर सोई॥
'जन्तूवधदूषण' तज के मुनि समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०७॥

ॐ ह्रीं जन्तुवधान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन करते हाथों में से काक ग्रास ले जावे।
तो मुनिनाथ तजें भोजन को ता दिन फेरि न खावे॥
'काकपिण्ड' यह दोष तजें मुनि समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ १०८॥

ॐ ह्रीं काकपिंडान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन करते ग्रास पड़े भू दातृ पात्र कर सेती।
तो मुनि जीमन नाहिं करे फिर है मर्यादा येती॥
'पाणिपात' दूषण तज के मुनि समिति एषणा पाले॥ या०॥ १०९॥

ॐ ह्रीं पाणिपातान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्रायार्ध्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन करते पाणिपात्र में जीव मरे यदि आई।
तो ऋषिराज तजें भोजन को करुणाभाव उपाई॥
'पाणिपात्र' जियघात दोष तज समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११०॥

ॐ ह्रीं पाणिपात्रजन्तुघातान्तरायदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्रायार्ध्यं नि. स्वाहा।

भोजन बेला आमिष देखे तो भोजन गुरु छांड़े।
तन विरकत संयम के लोभी भुक्ति-राग ना मांड़े॥
'आमिषदर्शन' दोष त्याग के समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ १११॥

ॐ ह्रीं आमिषदर्शनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्रायार्ध्यं नि. स्वाहा।

भोजन बेला जगद्गुरू को होय उपद्रव आई।
अन्तराय मानें जीमन में समताभाव समाई॥
'दोषोपसर्ग' त्याग के मुनिवर समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ ११२॥

ॐ ह्रीं उपसर्गान्तरायदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्रायार्ध्यं नि. स्वाहा।

भोजन करते पगों बीच से पञ्चेन्द्रिय निकसावे।
तो आहार न लेवें गुरुवर संयम नाहिं गमावें॥
'पादान्तरजियगमन' दोष तजि समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११३॥

ॐ ह्रीं पादान्तरजीवगमनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं नि. स्वाहा।

भोजन करते दाता कर से पात्र यदी गिर जावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी संयम भाव लियावे।
'पात्रसम्पतन' दोष त्याग के समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११४॥

ॐ ह्रीं भोजनपात्रसम्पतनान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं नि. स्वाहा।

भोजन करते अपने तन से मुनि जो मल निकसावे।
तो आहार तजें गुरु ज्ञानी जिन आज्ञा उर ध्यावे॥
दोष 'उचार' त्याग वृष लोभी समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११५॥

ॐ ह्रीं उच्चारत्यागान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं नि. स्वाहा।

भोजन करते अपने तन से निकले मूत्र अजाने।
तो आहार तजें गुरु ज्ञानी जिन धुनि रहस पिछाने॥
दोष 'प्रसार' त्याग के मुनिवर समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११६॥

ॐ ह्रीं प्रसारान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन हेतु भूल से यदि मुनि शूद्रों के घर जावे।
तो गुरु तजें जीमन को तिस दिन अनशन ही वे लावें॥
दोष 'अभोजनगृह' प्रवेश तज समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११७॥

ॐ ह्रीं अभोजनगृहान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मूर्छा खाय गिरे यति अथवा पर को मूर्छित देखे।
भवसागर के तीर गये यति भोजन भक्ष्य न लेखे॥

पतनदोश को त्याग मुनीश्वर समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ ११८॥

ॐ ह्रीं पतनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन करते कर्मयोग भू बैठ जाय मुनिराजा।
अन्तराय माने भोजन में वास करें हित काजा॥
'उपदेशन' यह दोष त्याग गुरु समिति एषणा पाले॥ या०॥ ११९॥

ॐ ह्रीं उपदेशान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कूकर आदिक हिंसक प्राणी दंश करत यति जोवें।
अन्तराय माने गुरुनायक कायर चित्त न होवें॥
'स्वानदंश' यह दोष त्याग के समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२०॥

ॐ ह्रीं स्वानदंशान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन बेला सिद्ध भक्ति को कर मुनि शीश नमावे।
कर से यदि भूमि छू जावे अन्तराय तब ध्यावे॥
'भूमिस्पर्श' दोष तज करके समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२१॥

ॐ ह्रीं भूमिस्पर्शान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन बिरियाँ अपना परका यदि खकार लख लेई।
अन्तराय माने गुरु ज्ञानी जिनवाणी जिन सेई।
'निष्ठीवन' यह दोष छांड़ मुनि समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२२॥

ॐ ह्रीं निष्ठीवनान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन काल निजोदर से यदि कृमि निकली यति जाने।
अन्तराय भोजन में माने खेद नहीं उर आने॥

'उदरकृमीनिर्गमन' दोष तज समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले॥ १२३॥

ॐ ह्रीं उदरकृमीनिर्गमनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाता के बिन दीने भोजन मुनि चाहे मनमांही।
अङ्गीकार करें तन मन से तो शिर दोष बढ़ाहीं॥
दोष 'अदत्तग्रहण' तज के मुनि समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२४॥

ॐ ह्रीं अदत्तान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन बेला यति वा पर पै, वार करे यदि कोई।
तो मुनि ता दिन अनशन धारें कर्मविजय हित सोई॥
दोष 'प्रहारे' तजें मुनिनायक समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२५॥

ॐ ह्रीं प्रहारान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन को जाते यदि पुर में अग्नि लगी हो भाई।
अन्तराय तो गिनें यतीश्वर भोजन नाहिं कराई॥
'ग्रामदाह' यह दोष त्याग के समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२६॥

ॐ ह्रीं ग्रामदाहान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मार्ग पड़ी पग अड़ी वस्तु जो ले मुनिराज उठाई।
तो उनके वर संयम माहीं दोष लगे अधिकाई॥
'पादग्रहण' यह दोष हर कर समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२७॥

ॐ ह्रीं पादग्रहणान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

राह पड़ी जो वस्तु आप कर ले मुनिराज उठाई।
अन्तराय तो गिनें जैन गुरु लोभ धरें न कदाई॥
'करग्रहण' यह दोष त्याग के समिति एषणा पाले॥ या०॥ १२८॥

ॐ ह्रीं करग्रहणान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऐसे बत्तिस अन्तराय को भोजन कालिक पाले।
तो मुनि संयम पाले अपने गुणलोभी अघ टाले॥
समिति एषणा ताके शुध हो स्वर्ण मोक्ष सुखदाई।
या जुत सम्यक्चारित पूजों जो मेरे मन भाई॥ १२९॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदन्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौ०- भोजन में नख निकले सोय, अनतराय तो गुरु को होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारितपूज्य सुमान॥ १३०॥

ॐ ह्रीं नखमलरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केश नीसरे भोजन मांय, अन्तराय तो यती मनाय॥ सा०॥ १३१॥

ॐ ह्रीं केशमलरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मृत प्राणी भोजन में जोय, तो मुनि भोजन छांड़े सोय॥ सा०॥ १३२॥

ॐ ह्रीं मृतजीवदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजनसमय अस्थि यदि जोय, तो यति भोजन त्यागे सोय॥ सा०॥ १३३॥

ॐ ह्रीं कीकसदर्शनमलरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीमत राध नजर जो आय, तो योगी आहार न पाय॥ सा०॥ १३४॥

ॐ ह्रीं राघमलरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन करत चर्म दिखलाय, तो योगी आहार न पाय॥ सा०॥ १३५॥

ॐ ह्रीं चर्मदर्शनरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीमत यदि रुधिर अवलोय, तो आहार तजे यति सोय॥ सा०॥ १३६॥

ॐ ह्रीं रुधिरदर्शनरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन बेला आमिष जोय, तो मुनि भोजन नाहीं होय॥ सा०॥ १३७॥

ॐ ह्रीं आमिषदर्शनरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन में यदि कणा दिखाय तो मुनि भोजन नाहीं खाय।
समिति एषणा तब शुध जान या जुत चारित पूज्य सुमान॥ १३८॥

ह्रीं कणदर्शनमलरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीमत तिल के अंश दिखाय तो मुनिवर आहार न पांय॥सा०॥१३९॥

ॐ ह्रीं तिलकणदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भोजन में यदि बीज दिखाय तो भोजन नाहीं यति खाय॥सा०॥१४०॥

ॐ ह्रीं बीजदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साबित फल भोजन में आय ऋषि अनशन धारे हरषाय॥सा०॥१४१॥

ॐ ह्रीं फलदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कन्द वस्तु भोजन में आय अन्तराय माने मुनिराय॥ सा०॥ १४२॥

ॐ ह्रीं फलदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तु देख के यती उठाय समिति एषणा शुद्धि कराय॥ सा०॥१४३॥

ॐ ह्रीं आदानसमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि जो वस्तु भूमि में धरें तो जियरक्षा में चित धरें।
निक्षेपणसमिति चितलाय याजुत चारित जजों सुखदाय॥ १४४॥

ॐ ह्रीं निक्षेपणसमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनमल जहँ भू क्षेपे यती भू शुद्धी देखें शुभमती।
यहव्युत्सर्गसमिति मनलाय या जुतचारित पूज्यसुभाय॥ १४५॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनविकल्प जिनध्वनिसम करें, और ठौर नाहीं मन धरें।
मनोगुप्ति धारें मुनिराय, या जुत वृत्त जजों सतभाय॥ १४६॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवच जिन आज्ञा सम होय, तातैं पाप लगे ना कोय।
वचनगुप्ति पालें मुनिराय, याजुत वृत्त जजों शिर नाय॥ १४७॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनको मुनि वश राखें सोय, बिना प्रयोजन चल ना होय।
कायगुप्ति सो जानो सही, या जुत वृत्त जजों शुभ मही॥ १४८॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांच महाव्रत समिति जु पांच, तीन गुप्ति मिलचारित सांच।
यों तेरहविध चारित जान, पूजों मन वच अर्घ्य सुआन॥ १४९॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकारसम्यक्चारित्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला॥

दोहा – सम्यक्चारित मोक्ष को, कारण और न कोय।
पापपन्थ तज सर्व ही, चारित की विधि जोय॥ १॥

॥ बेसरी छन्द॥

सम्यक्चारित भवदधि नावा, सिद्धक्षेत्र धरि देन स्वभावा।
परिग्रह धारि लहे ना याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥ २॥
मोहराय जीतन को जावे, जो चारित्र कवच तन लावे।
ध्यावत है सुर नर खग याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥ ३॥
सम्यक्चारित मोक्ष निशाना या बिन होय न कर्मन हाना।
या बिन मोक्ष न होवे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥ ४॥
चारितग्रहण वीर का कामा, कायर पै न सधे गुणधामा।
निर्मोही धारत है याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥ ५॥
शंकासहित जीव बलहीना, ते कहँ धार सकें यह दीना।
महापुरुष धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥ ६॥

कामीजन तो देखत लज्जें, शीलवान धर्मी जन सज्जें।
चारित उपमा दीजे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ ७ ॥
चारित को चक्रीधर चाहें, सुर खग इन्द्र भावना भाहें।
निकटभव्य धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ ८ ॥
चारित चरम शरीरी धारें, चारित से कर्मारि बिदारें।
कामदेव से धारत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ ९ ॥
चारित नाम सुनत हरषावे, सो जिय चारित महिमा पावे।
चारित धारत है धनि वाको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ १० ॥
यह चारित पीडाहर भाई, धारक शक्रविभव को पाई।
शिववांछक सेवत है याको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ ११ ॥
चारित सर्व हितू लखि भाई, चारित सर्वोत्तम सुखदाई।
मुनिजनपूजत ध्यावत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ १२ ॥
चारित को हम भी ललचावें, क्या जाने किस भव में पावें।
इस भव करत भावना याको, मैं पूजों मन वच तन ताको ॥ १३ ।
चारित का शरणा जिन पाया, ताने निजभव सफल बनाया।
शक्तिप्रद हितकर गिन याको, मैं पूजत मन वच तन याको ॥ १४ ॥
सुर नर पूजत ताहि को, जो चारित्र लहाय।
सो चारित महिमा अतुल, नमों सदा शिर नाय ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा - सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित लेहु मिलाय।
मोक्षमार्ग ये तीन ही, मैं पूजों शिर नाय ॥

॥ चौपई ॥

रत्नत्रय शिवमारग जान, या बिन मोक्षमार्ग ना आन ।
ये ही शिवदायक मन लाय, मोकों भवहर होय सहाय ॥ १ ॥

चाल मुनियानन्दी की

भुवन त्रय मुकुट शुभ, रतन त्रय जानिये।
तीन जग जीव थुति, करें हित मानिये ॥
तीस फल पापमल, धोय निज शुध करें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें ॥ २ ॥
तीन जग भ्रम्यो बिन, रतनत्रय पाय जी।
मिली नहिं सेवकी, कहूं सुखदाय जी ॥
अब शुभ दिन भयो, भक्ति इनकी करें।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें ॥ ३ ॥
चक्रि नरराज से, रतनत्रय काज जी।
तजें सब जगत सुख, दाय बहुराज जी ॥
छांड़ि सब परिग्रह, वास वनमें करें ॥ मैं० ॥ ४ ॥
बिना रतनत्रयी, तीर्थंकर देव जी।
सिद्ध पद ना लहें, करें बहुसेव जी ॥
तास तें रतन त्रय, एक शिवफल करें ॥ मैं० ॥ ५ ॥
भये रतन त्रय पाय, देव गणधर सही।
रतनत्रय लाभ तैं पदवी मुनि की लही ॥
सकल सुख देय कर, रतनत्रय अघ हरे ॥ मैं० ॥ ६ ॥
रतनत्रय तीर्थसम, जगत में सार जी।
रतनत्रय देय भव तार अविकार जी ॥

रतनत्रय गुरू हम, पाय तप को करें॥ मैं०॥ ७॥
रतनत्रय धर्म सब, हरे सब कर्म जी।
रतनत्रय ज्योति तैं, मिटे बहु मर्म जी।
रतनत्रय रूप लखि, मुकतिनार वर करे॥
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें॥ मैं०॥ ८॥
रतनत्रय छत्रता, शिर फिरे आय जी।
जीव सो जगत तजि, मुक्तिराज पाय जी॥
रतनत्रय लक्ष्मि की, चाह हरि सुर करें॥ मैं०॥ ९॥
रतनत्रय रवि सदृश, रागतम नाशि है।
रतनत्रय नेत्र तैं, तत्व सुप्रकाश है॥
रतनत्रय मुकुट शिव, नार बल्लभ करें॥ मैं०॥ १०॥
रतनत्रय राह को, नग्न जावे सही।
किन्तु जो परिग्रही, तास निभतो नहीं॥
रतनत्रय देहि भजि, आपसम जो करें॥ मैं०॥ ११॥
रतनत्रय एक जग, मांहि है सार जी।
कीजिये कहा कहों, और निरधार जी॥
रतनत्रय नाव भव, अब्धि पारे करें॥ मैं०॥ १२॥
विरत यह रतनत्रय, करे धन्य सोय जी।
या थकी फेर ना, जन्म मृत्यु होय जी॥
विरत यह रतनत्रय, मोक्ष दे हित करें॥ मैं०॥ १३॥
करो भवि रतनत्रय, विरत मन लाय जी।
समय यह कठिनकर, मिलो शुभ आयजी॥
मनुषतन उच्चकुल, याहि सो ही करें॥ मैं०॥ १४॥

विरत की विधी यों, आर्ष बतलाय जी।
वासत्रय आदि अन्त, एक मुक्ति पाय जी॥
रीति उत्कृष्ट सों, भव्य मन में धरे।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित करें॥ मैं०॥ १५॥
होय ना शक्ति उत, कृष्ट की तो सुनो।
आदि जुग मान इक, पारणा दिन गुनो॥
नांहि मध्य शक्ति अन्त, आदि अनशन करें॥ मैं०॥ १६॥
होय अल्पशक्ति तो, वह करे येम जी।
मध्य इक वास अन्त, पारना जीम जी॥
वास ना शक्ति तो, अल्प भोजन करें॥ मैं०॥ १७॥
विरत ऐसे करे, वर्ष तेरह सही।
तथा वर्ष नौ त्रय, विरत कर ध्वनि कही॥
अन्त उद्यापना, या दुगुन व्रत करें॥ मैं०॥ १८॥
शक्तिसम द्रव्य ले, फेरि जिन पूजिये।
दीजिये दान पर, भावना कीजिये॥
और घनी विधि जिन, वानि लखि के धरें॥ मैं०॥ १९॥
विरत ऐसे किये, कर्म अरि को हरें।
भव्य व्रत धार यों, भावना मन धरें॥
रत्नत्रय विरत की, सेव शिवसुख करें॥ मैं०॥ २०॥
दोहा - रत्नत्रय की सेव कर, रत्नत्रय गुण गाय।
रत्नत्रय की भावना, कर पल-पल शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति रत्नत्रयविधानम् समाप्तम्॥